Notification No.: 564/2024

Date of Award: 07-08-2024

Name of Scholar: Mohd Wasim

Name of Supervisor: Prof. Abdur Rahman Musawwir

Name of Department/Faculty: Hindi, Faculty of Humanities and Languages, JMI

Topic of Research: HINDI TATHA URDU KE MANOVAIGYANIK UPANYASON KA TULNATMAK ADHYAYAN

Keywords: Manovigyan, Aham, Swpan, Vyktittav Vikas, Stri-Purush Sanbandh, Samajik Varjnaayen.

Finding

हिंदी तथा उर्दू उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया गया है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने मनुष्य के बाहरी क्रिया-कलापों को छोड़कर उसकी चेतना को ही अपने कथ्य का आधार बनाया है। बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिदृश्य, टूटते-जुड़ते आदमी की विवशता, बनते बिगड़ते रिश्ते, मानसिक द्वंद्व आदि का यथार्थपरक चित्रण हिंदी-उर्दू उपन्यासों में मिलता है। मनुष्यों द्वारा गढ़े गए प्रतिमानों को तोड़कर उनकी छिपी वास्तविकता को व्यक्त करने का काम मनोविज्ञान करता है। हिंदी तथा उर्दू उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में एक ऐसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात् किया जो सामाजिक यथार्थ, जीवन मूल्यों, व्यक्तिगत बोध, सामाजिक वर्जनाएँ, यौन कुंठाएँ आदि को परिभाषित करने के साथ-साथ मानव मन की जटिल संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम रहा है।

हिंदी तथा उर्दू उपन्यासों में स्त्री-पुरुष के तथाकथित नैतिक एवं सामाजिक संबंधों को उपन्यासकारों ने आधुनिकता के तर्क से खंडित करने का प्रयास किया, क्योंकि संबंध मानव जीवन का अहम हिस्सा है, उसे किसी समय सीमा या दायरे में नहीं बाँधा जा सकता। तुलनीय उपन्यासों में इन्हीं रूढ़ियों, कुरीतियों एवं पक्षपातपूर्ण संरचना को सामाजिक जीवन में आत्मसात करते हुए नहीं दर्शाया गया बल्कि समाज की हर विसंगतियों पर प्रहार किया गया।